शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 जून 2014

मैला आँचल में आंचलिकता

रतनलाल परमार (शोधार्थी)
देवी अहिल्या विश्वविद्यालय
इन्दौर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

मैला आँचल उपन्यास का कथानक देश के सर्वाधिक पिछड़े राज्य बिहार के पिछड़े जिले पूर्णिया के उत्तर में मेरीगंज नामक एक गाँव से जुड़ा है। जो केन्द्र से बहुत दूर होने के कारण भौतिक प्रगति की दृष्टि से नितांत पिछड़ा हुआ है। इस सुदूर और अत्यन्त पिछड़े हुए अँचल को उसकी सम्पूर्णता में प्रस्तुत करने के लिए रेणु ने ऐसे कथा शिल्प और भाषा का इस्तेमाल किया है जो इसके पूर्व हिन्दी उपन्यास के लिए अपरिचित थी। प्रस्तुत शोध पत्र में इसी पर विचार किया गया है।

प्रस्तावना

रेणु के मेला आँचल में जो चीज सबसे पहले सामने आती है वह है, अँचल के निवासियों की निर्धनता, उसका मानसिक पिछड़ापन, जमींदार और तहसीलदार का शोषण, जातिगत आधार पर आपस की फूट। उपन्यासकार ने इस नग्न यथार्थ को बड़ी निर्ममता से प्रस्तुत किया है।" "मैला आँचल उपन्यास में चित्रित ग्रामांचल की दूसरी पहचान है, उसकी अन्धविश्वास ग्रस्त होना, जो अशिक्षा और मानसिक पिछड़ेपन की उपज है। अशिक्षा और अन्धविश्वास से ग्रस्त समाज की निर्धनता स्वयं सिद्ध तथ्य है। ग्रामीण अंचलों की निर्धनता का कारण सदियों से विदेशी और भारतीय सामन्तों द्वारा आम आदमी का शोषण है। इस गरीबी और शोषण का चित्रण रेणु ने नितांत यथार्थवादी तरीके से किया है। मेरीगंज की धरती पर दो-तीन आदमियों का अधिकार शेष ग्रामीण या तो खेतिहर मजदूर है या बटाईधारी पर खेती करते है। उन्हें भरपेट भोजन और तन ढँकने को कपड़ा नहीं मिलता और आवास के नाम पर फूस की झोपड़ी में उनकी सारी जिन्दगी कट जाती है। गरीबी का कारण तहसीलदार जैसे सम्पन्न व्यक्ति द्वारा, उनका शोषण करना।" मेंरीगंज में अज्ञानता के कारण यौनाचार, सेक्स आदि का ज्यादा ही चलन, विवाह पूर्व यौन सम्बन्ध इसमें प्रमुख रूप से उठाया गया है। कमली इसका प्रमुख उदाहरण है। धर्म के नाम पर भी धोखा है। धार्मिक स्थल मठ पर भी यौन शोषण होता है।

मठ के धर्म गुरूओं द्वारा वहाँ पर लक्ष्मी दासी से यौन शोषण चरखा सेन्टर की मंगला गौरी भी कालीचरण से अन्तिम समय में प्रेम करती है। अन्ततः मैला आँचल जैसा नाम दिया गया, वैसा ही उसका कार्य क्षेत्र है। इस तरह से धर्म के अड्डे पर इस प्रकार के कार्य हो रहे, इससे लोग क्या शिक्षा लेंगे, जो लोग मठ आदि को आदर्श मानते हैं। उनको इस बात की गहरी ठेस पहुँचती है। मैंला आँचल में जो प्रेम करने की छूट तहसीलदार बाबू अपनी लड़की को देते हैं, इसी का परिणाम है कि वह विवाह पूर्व गर्भवती हो जाती है। उसकी माँ कहती है मेरा आँचल जो मैला (गन्दा) हो गया था वह अब कमला को डाक्टर द्वारा अपनाने पर साफ हो जाता है। वह बदनामी व पाप के बोझ से मुक्त होने पर ईश्वर को धन्यवाद देती है। अपने आप को कमला की माँ धन्य समझती है। इसी घटना के चलते तहसीलदार बाबू का हृदय परिवर्तन हो जाता है

और अपनी तरफ से पाँच-पाँच बीघे जमीन गरीबों में बाँट देते हैं।

'मैला आँचल' की ख्याति में फणीश्वरनाथ रेणु की औपन्यासिकता का महत्वपूर्ण योगदान है। उपन्यास सम्राट प्रेमचंद के बाद फणीश्वरनाथ 'रेणु' के 'मैला आँचल' में भारत की आँचलिकता को साहित्य में गंभीर चिन्तन के रूप में ग्रहण किया गया। रेणुजी ने परवर्ती आँचलिक उपन्यास को दृष्टियों से प्रभावित किया है। भारतीय पराधीनता और स्वाधीनता के संघर्ष के बीच गाँव की कथा के माध्यम से रेणुजी ने ग्रामीण भारत की वास्तविकता को मुहावरा प्रदान किया है। हिन्दी साहित्य का सर्वाधिक प्रसिद्ध आँचलिक उपन्यास मैला आंचल है। मैला आँचल का कथानक पूर्णिया है। उत्तरी भारत का सीमांत पूर्णिया, बिहार राज्य का एक पिछड़ा जिला है। इसके एक ओर नेपाल, दूसरी ओर बांग्लादेश और पश्चिम बंगाल है। पूर्णिया जिले में ऐसे बहुत से गाँव और कस्बे हैं, जो आज भी अपने नामों पर बसे है।

विभिन्न सीमा रेखाओं से इसकी बनावट पूरी होती है। दक्खिन में सन्थाल परगना और पश्चिम में मिथिला की सीमा रेखाएँ है। इसके हिस्से के एक ही गाँव को पिछले गाँवों का प्रतीक मानकर इस उपन्यास का कथा क्षेत्र बनाया है। एक कथन - "इसमें फूल भी है, शूल भी, धूल भी है, गुलाब भी, कीचड़ भी है। चन्दन भी, सुन्दरता भी है, कुरूपता भी। मैं किसी से दामन बचाकर निकल नहीं पाया जो भी हो निष्ठा में कमी महसूस नहीं करता।" रेणुजी के इस कथन से परिवेश का आधार निर्मित होता है।

कथ्य के आधार पर 'मैला आँचल' की आँचलिकता

मैला आँचल पर प्रसिद्ध उपन्यासकार रेणु का मत "यह है मैला आँचल, एक आँचलिक उपन्यास। कथानक है पूर्णिया। पूर्णिया बिहार राज्य का एक जिला है, इसके एक ओर है नेपाल, दूसरी ओर पाकिस्तान और पश्चिम बंगाल। विभिन्न सीमा रेखाओं से इसकी बनावट मुकम्मल हो जाती है, जब हम दक्खिन में सन्थाल परगना और पश्चिम में मिथिला की सीमा रेखाएँ खींच देते हैं। मैंने इसके एक हिस्से के एक ही गाँव को पिछड़े गाँवों का प्रतीक मानकर इसे उपन्यास कथा का क्षेत्र बनाया है। "इसमें फूल भी हैं, शूल भी, धूल भी है, गुलाब भी, कीचड़ भी है, चन्दन भी, सुन्दरता भी है, कुरूपता भी। मैं किसी से दामन बचाकर निकल नहीं पाया। कथा की सारी अच्छाईयों और बुराईयों के साथ साहित्य की दहलीज पर आ खड़ा हुआ हूँ, पता नहीं अच्छा किया या बुरा। जो भी हो, अपनी निष्ठा में कमी महसूस नहीं करता।"

उपन्यास में महत्वपूर्ण पात्र हैं- डाक्टर साहब, यानी डाक्टर प्रशांत कुमार। उसे अपनी जाति के बारे में सचमुच जानकारी नहीं है। जन्म से ही वह अपने बारे में सुनता रहा। उसे उपाध्यायजी ने कोसी नदी में पाया था। वह मेरीगंज के अस्पताल में काम करने हेतु नियुक्त होकर आया था। आँचलिक उपन्यास मैला आँचल में अनेक पुरूष एवं नारी चरित्र हैं। इनमें से डॉ.प्रशांत, लक्ष्मी कोठारिन, बावनदास आदि प्रमुख हैं। गाँव के तहसीलदार विश्वनाथ प्रसाद की इकलौती बेटी कमला उसे प्यार से कमली कहते हैं। डाक्टर को देख कर उसकी बीमारी ठीक हो जाती है। डाक्टर प्रशांत, तहसीलदार साब के घर रोज शाम को जाता व चाय पीता है। कमली डाक्टर से प्रेम करती है। उसका भी अस्पताल में आना-जाना लगा रहता है। इस बीच कमली गर्भवती हो गयी, बड़े घर की बेटी, इतनी बड़ी इज्जत ये बात तहसीलदार को अच्छी नहीं लगी। 'मैला आँचल' उपन्यास में 'रेणु' जी ने सरल भाषा, क्षेत्रीय आँचलिक भाषा का प्रयोग किया। उन्होंने कहीं बँगला भाषा का भी थोड़ा प्रयोग किया जो समझ में आती है।

अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग भी हिन्दी में किया, पेन, हॉस्पिटल, डिस्टीबोट, इन्जेक्शन, आदि। रेणुजी ने इसमें वहाँ के भोजपुरी लोग गीतों का भी प्रयोग किया है। लछमी कोठारिन लछमी कठोर तपस्या से गढ़ी गयी 'मैला आँचल' की नारी है। लछमी कोठारिन का चरित्र अद्भुत है। वह एक साथ मर्यादित ग्रामीण संस्कारी आध्यात्मिक है और संसारी रूप से मायावी। वस्तुतः लछमी की कठोर अग्निदीक्षा पूरी हो जाती है। उसे सब दासी, कोठारिन कहते हैं। लछमी ने मठ को पहले बहुत संभाला, लेकिन वहाँ के अत्याचार भरे जीवन से वह तंग आकर, बालदेव जी की सरलता से वशीभूत हो गयी। लछमी एक प्रकार से साध्वी बनकर मठ में रहती थी।

भाषा संवाद

'मैला आँचल' की आँचलिकता में पूर्णिया की भोजपुरी बोली की महत्वपूर्ण भूमिका है। रेणुजी ने आँचलिक मुहावरे और दैनंदिनी जीवन के कसे हुए भाषा व्यवहार से आँचलिकता को जीवंत बनाया है। रेणु की भाषा के विषय में डा.मधुरेश का मत है, "आँचलिक भाषा का ऐसा प्रयोग न तो किसी पूर्व आँचलिक उपन्यास में हुआ और न ही परवर्ती उपन्यासों में। यहाँ गाँव में मलेरिया उन्मूलन के दल के आने की प्रतिक्रिया का वर्णन इस प्रकार किया गया है "गाँव में यह खबर तुरंत बिजली की तरह फैल गई-मलेटरी ने बहरा चेथरू को गिरत कर लिया है, और लोबी नलाल के कुएँ से बाल्टी खोलकर ले गए थे।'

निष्कर्ष

'मैला आँचल' उपन्यास अपने कहय और शिल्प के कारण खासी चर्चा में रहा। देश के आज़ाद होने के बाद सुनाहले स्वप्नों को पूरा करने में देश जुट गया। लेकिन जब साहित्यकारों की दृष्टि ग्रामांचलों पर गयी, तो उनका मन कातर हो उठा। सारे स्वप्न धराशायी हो गए। आंचलिक भाषा में उनकी समस्याओं का चित्रण करने में जैसी सफलता रेणु को मैला आंचल में मिली है, वैसी और किसी को नहीं।

संदर्भ ग्रंथ

1.हिन्दी उपन्यास का इतिहास-गोपाल राय, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पहली आवृत्ति, 2005 पृ. 243

2.मैला आँचल-फणीश्वरनाथ रेणुः राजकमल प्रकाशन, पेपर बेक्स, पहली आवृत्ति, 2008 3.मैला आँचल-भूमिका से

3.मैला आँचल-फणीश्वरनाथ रेणुः राजकमल प्रकाशन, पेपर बेक्स, पहली आवृत्ति, 2008 पृ.सं. 5

4.दृष्टव्य: मैला आँचल का महत्व,पृ.66

5.मैला आँचल-फणीश्वरनाथ रेणुः राजकमल प्रकाशन, पेपर बेक्स, पहली आवृत्ति, 2008, पृ.सं. 9